सफलता प्राप्त करने का सफल सूत्र

अशोक मानव

मानव जीवन प्रकृति का सबसे अधिक ऊर्जावान प्राणी है। हर व्यक्ति अपने आप को विजेता के रूप में देखना चाहता है। हर विषय में सफलता प्राप्त करना चाहता है पर हार का डर विजेता बनने से रोकता है। प्रकृति में विषय है तो उसका हल अवश्य होगा। विषय का हल परिश्रम से मिलता है। परिश्रम सही दिशा में होना चाहिए। दिशा तब मिलती है जब व्यक्ति सकारात्मक सोच धारण करता है। सकारात्मक सोच सहयोगी के पास पहुंचाती है। सहयोगी मंजिल को दिखाते हुए उत्साह पैदा करता है। उत्साह अपने अंदर की ऊर्जा को शक्तिशाली बनाता है। ऊर्जा जब शक्तिशाली होती है तो विरोधी ऊर्जा को काट देती है। विरोधी ऊर्जा मंजिल के मार्ग में अंधेरा पैदा करने का कार्य पैदा करती है जिससे मंजिल दिखाई न पड़े। साथ में व्यक्ति के अंदर निराशा पैदा करने का कार्य पैदा करती है। जब व्यक्ति के अंदर निराशा पैदा हो जाती है तब व्यक्ति के अंदर ऐसा भाव पैदा होता है कि कार्य पूरा होगा या नहीं। नहीं पूरा होगा तो क्या करेंगे। व्यक्ति का यही विचार अपने लिए बाधा कार्य करता है। व्यक्ति का यही विचार असहयोगी लोगों को जोड़ने लगता है जो हतोत्साहित करता है। ऐसा होने से व्यक्ति अपनी मंजिल से दूर होजाता है। व्यक्ति का जैसा विचार होता है वैसी ऊर्जा प्रकृति से आने लगती है। प्रकृति में ऊर्जा, पदार्थ और जीवन पर परम प्रकाश, सूर्य से पैदा होती है। जिस गुण का पदार्थ जीव होता है उसके अंदर से उसी गुण की ऊर्जा निकलती है। इस जगत में हर ऊर्जा का अपना महत्व होता है। एक ऊर्जा से निर्माण होता है तो दूसरी ऊर्जा से निर्माण होता है। निर्माण की ऊर्जा सहयोगी बनकर मंजिल की तरफ ले जाती है।

न्याय की ऊर्जा योग्यता के अनुसार अधिकार दिलाती है। निर्माण और न्याय की ऊर्जा पदार्थ से पैदा होती है। यही ऊर्जा जीव से अपना कार्य पूरा करवाती है। जीव जगत थोड़ा इससे भिन्न होता है, इसमें दो भाव पाए जाते हैं एक सहयोगी, दूसरा विरोधी। विरोधी भाव का जनम अहंकार से होता है। इसे अवगुण कहा जाता है। जो स्वयं को मिटाता है। और दूसरे के लिए बाधा उत्पन्न करता है। सहयोगी भाव एक गुण होता है जो निर्माण करता है। और मंजिल पर पहुंचाने में सहायक होता हैं। ऐसी क्रियाएं छूटे हुए भाव के कारण होती रहती है। विरोधी भाव छू न पाए और सहयोगी भाव हमेशा मिलता रहे। इस कला को जानकर हर व्यक्ति मंजिल को प्राप्त कर सकता है।

विरोधी हो या अन्य पड़ाव का कोई व्यक्ति विषय कभी भी पैदा हो सकता है। पैदा हुए विषय पर जीत हर व्यक्ति प्रापत करता है। जीत प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका होता है– सकारात्मक सोच, शांत मन से सिर्फ विषय को देखना, जब तक विषय न पूरा हो तब तक किसी अन्य विषय को मन में आने देना, मन शरीर से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा विषय पर लगा देना, इस बीच कोई अन्य कार्य आ जाए तो बिना मन पर दबाव डाले, सहज भाव से पूरा कर देना, विषय के प्रति नकारातमक सोच कभी भी न उत्पन्न होने देना, ऐसी दृढ़ इच्छाशक्ति पैदा होने के बाद जीवन की ट्रेन पटरी की ऐसी ट्रैक से जुड़ जाती है जो विषय की मंजिल रूपी स्टेशन पर स्वतः पहुंच जाती है। जब मन विषय पर केंद्रित हो जाता है तब विषय का सबसे सरल मार्ग दिखाई देने लगता है और सकारात्मक सोच होने के कारण प्रकृति से सहयोगी ऊर्जा मिलने लगती है जो व्यक्ति सम्पर्क में आता है। वह सहयोग प्रदान करने लगता है। इस प्रकार व्यक्ति को